११ यथार्थ-६ : मानव जाति एक, कर्म अनेक

दिनांक -४/१०/११

मानव जाति एक, कर्म अनेक | धरती(राष्ट्र) एक, राज्य अनेक | मानव जाति ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में जीते हुए,ज्ञानी एवं विज्ञानी ज्यादा से ज्यादा सुविधासंग्रह के पक्षधर हुए | आदर्शवादी विधि से सुविधाओं को त्यागने की बात कहा जाता है | जीने के रूप में सुविधाओं के रूप में जिया जाता है | सुविधा संग्रह की प्रवृत्तियाँ जंगल युग से प्रारंभ होता है | जंगल युग में अधिक लकड़ी, कम लकड़ी इकट्ठा करने के क्रम में रहा है | पत्थर युग में कम पत्थर, ज्यादा पत्थर इकट्ठा करने के रूप में रहा है | धातु युग में ज्यादा धातु, कम धातु इकट्ठा करने के रूप में रहा है | अभी के युग में सुविधा इकट्ठा करने के रूप में आंकलित है | इस क्रम में मानव अपनी विवशता को स्पष्ट कर चुका है, चाहे ज्ञानी हो, विज्ञानी हो, अज्ञानी हो | इस प्रकार सभी मानव भौतिकवाद के अनुसार एक ही लक्ष्य सुविधा संग्रह में फंस चुका है | इस क्रम में प्रदूषण छा जाने से, अनेक प्रकार के रोग राटा फैलने से, मानव पीड़ादायक होने से, विकल्पात्मक विचारधारा प्रस्तावित है | इसका नाम रखा है | मध्यस्थ दर्शन का स्वरुप चार भाग में दर्शन, तीन भाग में विचार(वाद), तीन भाग में शास्त्र और संविधान प्रस्तुत है | इसका प्रयोजन व्यवस्था में जीना है अथवा विकसित चेतना पूर्वक जीना है अथवा जागृतिपूर्वक जीना है | विकसित चेतना विधि से प्रमाणित होने के क्रियाकलाप का नाम जागृति है | मानव चेतना, देव चेतना और दिव्य चेतना ही विकसित चेतना हैं | यह सब जीवन सहज क्रियाओं का ही प्रकटन हैं |

इस प्रकार से मानव जागृति पूर्वक जीने की विधि से हर व्यक्ति समाधान सम्पन्नहोने, हर परिवार समाधान, समृद्धिसम्पन्न होने, सम्पूर्ण मानव अर्थात सम्पूर्ण देश कालीन मानव एक समाज के रूप में प्रतिष्ठित होने के रूप में है जिसको अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में होना अध्ययन विधि से स्पष्ट किया है | ये सभी दर्शन, विचार, शास्त्र को विकल्प रूप में प्रस्तुत किया है | विकल्प भौतिकवाद आदर्शवाद के सन्दर्भ में है | इस प्रकार विकल्प के विधि से हम सभी शैक्षणिक विधि में सहमत होते हैं तो समाज की बात आती है, परिवार की बात है, जिसमें अनिश्चयता, अस्थिरता के स्थान पर व्यक्ति में स्थिरता समाधान के रूप में, परिवार में स्थिरता समाधान, समृद्धि की परम्परा के रूप में, सम्पूर्ण मानव में स्थिरता समझदारी के रूप में, सार्वभौम व्यवस्था विकसित चेतना के अर्थ में सार्थक होना पाया गया है | इसे हर व्यक्ति परिशीलन कर सकता है | हर मनुष्य में जाँचने का गुण है | समझदारी जाँच कर जीने के रूप में होता है | समझदारी के प्रतिरूप में होना ही जागृतिहै,इस प्रकार मानव समझदारी के साथ मानवत्व का प्रकाशन है | यही हर मानव का अधिकार है | हर मानव का तात्पर्य, हर देश काल में निवास करता हुआ मानव से है अथवा मानव के अर्थ में है | इसे हर मानव अध्ययन विधि से समझ सकता है, जी सकता है, प्रमाणित कर सकता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत